IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधी आबादी का उदय ही सर्वोदय की असली पहचान

शशांक त्रिपाठी[1], डॉ. ममता उपाध्याय[2]

[1]शोध छात्र, [2]प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

कुमारी मायावती राजकीय महिला महाविद्यालय, गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र.

संबद्ध – चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय , मेरठ, (उ.प्र.), भारत

शोध सारांश : सर्वोदय पर राजनितिक अर्थों में चर्चा स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व और बाद से आज तक होती रही है, परन्तु महात्मा गाँधी ने जो सर्वोदय शब्द अन्त्योदय से ग्रहण किया था, उस अन्तोदय की अंतिम पंक्ति में खड़ा व्यक्ति कौन है, इसकी चर्चा शायद ही कहीं की गयी हो। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि चाहे कोई भी देश, काल, समाज हो, अंतिम पंक्ति में सदैव ही आधी आबादी/नारी खड़ी दिखाई देती है। आज आधी आबादी तेजी से अपने कदम बढ़ा रही है, हर आयाम में उसकी मौजूदगी देखी जा सकती है परन्तु यह अभी भी कम है। इसे बढ़ाने के लिए समाज के गैर–जरुरी भेदों को खत्म करना होगा, जिससे इनका उदय हो सकें और सही अर्थो में समाज में सर्वोदय हो। संधारणीय विकास लक्ष्य के लक्ष्य – 5 में वर्णित लैंगिक समानता का लक्ष्य भी, यह प्रदर्शित करता है कि महिला के साथ असमानता का व्यवहार होता रहा है।

कीवर्ड : सर्वोदय, उपयोगितावाद, आधी आबादी, सरकारी योजनायें, भागीदारी

शोध का औचित्य : सर्वोदय को भारत में सदैव ही जाति व्यवस्था व आर्थिक व्यवस्था के सांचे के हिसाब से देखा गया है कि सभी की उन्नति हो, सभी विकास करें। परन्तु वैदिक काल के पश्चात सबसे बड़ा भेदभाव महिलाओं के साथ हुआ। समाज में जाति व्यवस्था के अंतर्गत अनेक जातियों का निम्न स्थान माना गया परन्तु किसी जाति में सबसे निम्न स्थान उस जाति की महिला का होता था। चूंकि महिला को पुरुष से नीचे माना गया तो निम्न जाति के पुरुष से भी नीचे कोई था तो वो थी महिला। प्रस्तुत शोध यह दर्शाता है कि आज समाज में महिला का यदि उत्थान हो रहा है तो ही सही मायने में सर्वोदय हो रहा है।

परिकल्पना : आधी आबादी पूर्व मान्यताओं और रूढ़ियों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ रही है और शासकीय नीतियों का इस दिशा में सकारात्मक योगदान है।

परिचय : महात्मा गाँधी ने 19वीं सदी के अंग्रेज लेखक जॉन रस्किन की एक पुस्तक "अनटू दिस लास्ट" से भी प्रेरणा ग्रहण की थी । गाँधी जी ने इस से प्राप्त अन्तोदय शब्द को सर्वोदय में परिवर्तित कर दिया। सर्वोदय मूलतः एक संस्कृत शब्द है जो दो शब्दों से मिलकर बनता है : सर्व {सभी} और उदय {उत्थान} – जिसका अर्थ है 'सभी का उत्थान', ' सार्वभौमिक कल्याण', 'सार्वभौमिक प्रगति' ।

सृष्टि अथवा प्रकृति, जो स्वयं में एक स्त्रीलिंग शब्द है, उसकी अद्वितीय रचनाओ में शामिल स्त्री, जिसके लिए आधी आबादी शब्द का प्रयोग होता है। प्रकृति ने स्त्री और पुरुष को केवल एक जैविक अंतर दिया था और उसके फलस्वरूप भी स्त्री, पुरुष से उच्च अवस्था में थी क्योंकि नयी प्रकृति को जन्म दे पाने की क्षमता स्त्री में ही निहित थी। परन्तु शारीरिक बल के आधार पर स्त्री को निम्न्तर दर्जा दिया गया और वहीं से स्त्री का शोषण प्रारंभ हुआ।

सर्वोदय : सर्वोदय एक सर्वव्यापक दृष्टि है जो हर व्यक्ति के सम्पूर्ण भलाई का आश्वासन देता है। एक ऐसा कल्याणकारी समाज, जिसमें मानव के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण तथा सर्वांगीण विकास की कामना की गयी है। इसलिए यह जेरेमी बेन्थैम के 'सबसे बड़ी संख्या की सबसे बड़ी खुशी' के **उपयोगितावादी सिध्दांत** से बेहतर है। सर्वोदय का मूल है कि मनुष्य अनिवार्य रूप से अच्छा है और मानव चरित्र या तो तप (आत्म प्रयास) द्वारा या सत्याग्रह द्वारा बुरइयो से दूर हो सकता है। भारतीय संस्कृति में भले ही सर्वोदय शब्द तीसरी सदी में आया, पर इसकी भावना हमेशा से विद्यमान रही है। अधोलिखित सन्दर्भ इसकी प्रमाणिकता प्रस्तुत करते है –

- वृहद् अरण्यक उपनिषद् में उद्धृत श्लोक :

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,

सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत ।।"

अथार्त सभी सुख शांति से रहें, सभी निरोग हो जाये, किसी को रोग न हो, सभी का मंगल व कल्याण हो और किसी को भी दुःख का भोगी न बनना पड़े ।

- महा उपनिषद के अध्याय – 6 ं में वर्णित श्लोक :

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।"

अथार्त ये मेरा है, ये दूसरे का है, इस तरह की गिनती छोटे सोच वाले लोग करते है,

उदार मन वाले लोगों के लिए पूरी पृथ्वी ही अपना परिवार है ।

साल 2023 के G –20 सम्मलेन में भारत ने इसी श्लोक को टैग लाइन बना कर अपनी परम्परा का प्रदर्शन किया ।

महिलाओ की वर्तमान दशा : नैसर्गिक रूप से स्त्री अधिक सहनशील, संवेदनशील ,सृजनात्मक व धैर्यवान है मगर शारीरिक बल के तर्क पर उसे पुरुष समाज ने अबला बना दिया । नारी गर्भ से मानव अस्तित्व है अर्थात् नारी, स्त्री–पुरुष दोनों की ही जननी है परन्तु एक ही गर्भ से ही जन्म लेने के बाद भी दोनों की हैसियत अलग–अलग हो जाना, आज समाज की विडंबना है । लडकियों को इस दौर में भी पढ़ाई से दूर रखा जाता है, स्कूल भेजना तो बहुत दूर की बात है । वहीं जो महिला घर–परिवार के प्रोत्साहन से और अपने संघर्ष से आगे निकल जाती है, उसे कभी पदोन्नति में बाधा, तो कभी कार्य स्थल पर शोषण के माध्यम से दबाया जाता है, जो ये दर्शाता है कि एक वर्ग की सोच आज भी वही है जो सैकड़ो साल पहले थी । पितृ सत्तात्मक सोच, जो पुरुषो पर हावी है और इसी सोच के कारण महिलाओ को दोयम दर्जे का समझा जाता है । स्त्री हर समाज के केंद्र में होकर भी केंद्र से कोसों दूर है । समाज महिला को एक मानव के रूप में पहचाने जाने में विफल रहा है ।

महिलाओ की वर्तमान दशा में परिवर्तन के संकेत : महिलाएं तमाम तरह की सोच व पूर्वाग्रहों के बीच भी अपनी हस्ती बढ़ा रही हैं, हर क्षेत्र में वो आगे बढ़ रही हैं, जो आधी आबादी की जिजीविषा को दिखाता है । कोविड दौर में वायरस नियंत्रण में महिला नेतृत्व वाले देशो ने, न केवल प्रभावी नियंत्रण किया बल्कि इसके प्रसार को भी काबू में करके दुनिया को चौंका दिया, ये नारी आत्मबल का बेहतरीन उदहारण है । कोविड दौर में दुनिया ने देखा कि किस प्रकार महिलाएं अपने दुधमुंहे बच्चों, परिवारों को छोड़ कर पुलिस और चिकित्सक के रूप में, कभी 24 घंटे ड्यूटी करके तो कभी 10–12 घंटे पीपीई किट पहन कर ड्यूटी निभाई, पीपीई किट जो 10 मिनट में ही पसीने से तर कर देती है । उसमे 12 घंटे काम करना स्त्री की सहन शीलता ही दर्शाता है । वर्तमान समय में महिलाये स्वयं के अधिकरो के प्रति जागरूक हो रही हैं, वे अपने अधिकारों के लिए लड़ना सीख रही हैं ।

भारत में महिला भागीदारी का बढ़ता ग्राफ :

कृषि – 9वीं कृषि जनगणना 2010–11 के आँकड़ो के मुताबिक भारत में कृषि भूमि पर मालिकाना हक रखने वाली महिलाओं की संख्या 12.8% थी, जो 10वीं कृषि जनगणना 2015–16 में बढ़ कर 13.9% पँहुच गयी है । दक्षिणी राज्य जैसे केरल और कर्णाटक में यह संख्या 19–20% तक है । राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय के अनुसार देश में 18% कृषक परिवारों में निर्णय महिलाएं करती हैं । अंतर्देशीय मत्स्य पालन में महिलाओं का योगदान लगभग 46% तक है ।

सैन्य सेवा – देश की अग्रिम रक्षा पंक्ति में आधी आबादी को मेडिकल कोर के अलावा अन्य जगहों पर नियुक्ति साल 1992 में शोर्ट सर्विस कमीशन के तहत दी गयी, जिससे सेना में उनके अधिकारी बनने का रास्ता साफ हुआ । साल 2014 में नौसेना, वायुसेना व थलसेना में इनकी उपस्थिति क्रमशः 3%, 8.5%, 3% थी जो साल 2018 में बढ़कर 6%, 13% व 3.8% हो गयी है । अब ये अपनी क्षमता प्रदर्शन वायुसेना के लड़ाकू स्ट्रीम के साथ–साथ सियाचिन जैसे दुर्गम क्षेत्रों में कर रही हैं । 2023 में लोकसभा में दिए रक्षा मंत्री के बयान के अनुसार सेना में अधिकारी और अन्य रैंक सभी को मिलकर कुल 11414 महिलाएं सेवारत हैं ।

श्रमबल – देश की श्रमबल में महिलाएं हमेशा से अभिन्न अंग रही हैं । साल 1981 में इनकी भागीदारी 19.67%, 1991 में 22.27% एवम् 2001 में यह बढ़कर 30.79% तक हो गयी । आधी आबादी की यह हिस्सेदारी 2004–05 में बढ़कर 32.2% तक पहुँच गयी । आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2022–23 के अनुसार आधी आबादी की भागीदारी अब 37.0% हो गयी है । उत्तर प्रदेश में मनरेगा के तहत मजदूरों में 37% महिलाएं हैं ।

प्रशासन – भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में शामिल महिला नेतृत्व पूर्व में कम था परन्तु अब इस संख्या में तेजी से बदलाव आ रहा है । 2011 में जहाँ 11% लड़कियाँ इसकी परीक्षा में शामिल होती थी, वहीं 2020 में यह संख्या 31% तक पहुँच गयी है । आज देश में 1527 महिला आई.ए.एस. अधिकारी कार्य कर रही हैं, 2022 में सचिव स्तर पर 14% और मुख्य सचिव स्तर पर 3 महिला अधिकारी काम कर रही थी । 2015 के डेटा के अनुसार सिविल सेवा परीक्षा में सफल होने वाली लड़कियों का प्रतिशत 2004 के 15% से बढ़कर 2015 में 22.9% हो गया ।

राजनीति – भारत के संविधान निर्माण सभा में 15 महिला प्रतिनिधि थी, बाद में प्रथम लोकसभा में 22 महिलायें निर्वाचित होकर संसद तक पहुँची । स्वतंत्रता के बाद से ही राजनीति में महिलाओं का रुझान बढ़ा है, चाहे चुनाव में वोट डालना हो या चुनाव लड़ना । 2019 के लोकसभा चुनाव में 724 महिलाओं ने अपनी उम्मीदवारी प्रस्तुत की थी, जिसमें से 78 महिलाएं संसद तक पहुँचीं, आजादी के बाद से यह सबसे बड़ी संख्या है । 2024 के लोकसभा चुनाव के संपन्न हो

चुके 2 चरणों में 235 महिला उम्मीदवार हैं, पहले चरण में 68.53% महिलाओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जबकि पुरुष मतदान 68.02% रहा, दूसरे चरण में भी महिलाएं वोट देने में पुरूषों से आगे रही ।

न्यायिक क्षेत्र – सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना के बाद से अब तक 11 महिला न्यायाधीश नियुक्त हो चुकी है, इस बार कोलोजियम ने एक साथ 3 महिला जजों की नियुक्ति की है । संभवतः इन्ही में से एक न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना 2027 में देश की प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश बन सकती है । देशभर के उच्च न्यायालयों में 83 महिला न्यायाधीश हैं, वहीं अधीनस्थ न्यायालयों में 30% न्यायाधीश महिलाएं हैं । असम, तेलंगाना, राजस्थान, आंधप्रदेश जैसे राज्य जहाँ अधीनस्थ सेवा में आरक्षण का प्रावधान है वहाँ यह संख्या 40%–50% तक है । देश में कुल 15% महिला अधिवक्ता है ।

विमानन – भारतीय विमानन क्षेत्र में पायलट के तौर पर 15% महिलाएं है जोकि वैश्विक स्तर के 11% से अधिक है । 2021 में भारत की 4 महिला पायलटों के क्रू–मेम्बर ने दुनिया की सबसे लम्बी दूरी की उड़ान पूरी करके दिखाया, आम तौर पर एयरलाइन्स यूरोप या जापान होते हुए अमेरिका जाती है पर भारतीय पायलटों ने सीधे उत्तरी ध्रुव के रास्ते इस उड़ान को पूरा किया ।

पुलिस – देश भर की पुलिस बल में महिलाएं 2,15,504 है जो कुल बल का 10.3% है । सर्वाधिक महिला पुलिस बल बिहार राज्य में 25.3% है जबकि वहाँ 35% महिला बल के आरक्षण का प्रावधान है और गुजरात, सिक्किम, राजस्थान जैसे राज्यों में 30% आरक्षण लागू है । केन्द्रीय सशस्त्र बलों में महिला हिस्सेदारी 2.9% है ।

नारी उत्थान हेतु प्रमुख सरकारी प्रयास :

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना : इसके माध्यम से गर्भवती व स्तनपान करने वाली स्त्री को 5000 रूपये की राशि उनके खाते में 2 किस्तों में दी जाती है । दूसरी सन्तान लड़की होने पर यह राशि 6000 रूपये हो जाती है । ऐसा जन्म से पहले लिंग चयन को हतोत्साहित करने के लिए किया गया है । 30/11/2022 तक 2.79 करोड़ महिलाएं इससे लाभान्वित हो चुकी हैं।

वन स्टॉप सेण्टर : केंद्र सरकार द्वारा इस योजना को 2016–17 में लाने का उद्देश्य यह था कि हिंसा से पीड़ित महिला को सभी आवश्यक सेवाएँ जैसे : अल्प प्रवास 5 दिवस, मेडिकल सहायता, कानूनी परामर्श आदि एक ही छत के नीचे उपलब्ध हो । 30/09/2022 तक 88 लाख से अधिक महिलाओं को इसका लाभ मिल चुका है ।

प्रधानमंत्री उज्जवला योजना : 2016 में शुरू इस योजना के तहत आर्थिक स्तर पर कमजोर गृहणी को रियायत दर पर गैस कनेक्शन उपलब्ध कराया जाता है । बीपीएल श्रेणी के कार्ड धारक इस योजना के लाभार्थी है । इस योजना का मुख्य उद्देश्य महिलओं को लकड़ी के धुएं से मुक्त कराना है । इस योजना में 09/05/2024 तक 103,251,308 कनेक्शन जारी किये जा चुके हैं ।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ : इसका मुख्य उद्देश्य बालिका लिंग अनुपात की गिरावट को रोकना तथा बालिकाओ को शिक्षित करके उनका सशक्तिकरण करना है । 2015 में लागू इस योजना के समय 'जन्म के समय लिंगानुपात' 918 था , जो साल 2021 में 16 अंको के सुधार के साथ 934 हो गया है ।

सुकन्या समृद्धि योजना : 2015 में लागू यह योजना 10 साल से कम उम्र की लड़कियों के सुरक्षित भविष्य हेतु बचत प्रबंधन करती है । व्यक्ति बैंक या पोस्ट ऑफिस में बच्ची के लिए खाता खुलवा सकता है, समयावधि पूर्ण होने पर खाते में ही सारा पैसा मिल जायेगा । साल 2023 तक इस योजना में 2.73 करोड़ खाते खुल चुके हैं ।

निष्कर्ष : महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी कुशलता से दुनिया को परिचित करा दिया है, चाहे सेना हो, मेडिकल हो, अन्तरिक्ष या देश को नेतृत्व देना हो। महिला के सशक्त होने का आशय उसकी निर्णय लेने की क्षमता से है कि वह अपने निर्णय स्वयं ले रही है या किसी अन्य पर आश्रित है। पुरुष को यह स्वीकार करना होगा कि स्त्री उस पर आश्रित नही बल्कि वे दोनों अन्योन्याश्रित है। हाल ही में मध्य प्रदेश में एक महिला जो अपने भाई को किडनी दान करना चाहती थी, उससे उसके पति का सहमति पत्र माँगा गया। जबकि अन्य सदस्यों की सहमति थी पर हॉस्पिटल उसका ट्रांसप्लांट नही कर रहा था, पति की सहमति के बिना। बाद में हाई कोर्ट के निर्देश पर ट्रांसप्लांट पूर्ण हुआ। इस प्रकार की घटनाये यह दर्शाती है कि आज भी समाज में महिला को पुरुष की संपत्ति माना जाता है। आज तक भारत में केवल 1 महिला प्रधानमंत्री और 2 महिला राष्ट्रपति हुई है तथा कुल 15 महिलायें राज्यों के मुख्यमंत्री पद तक पहुँच पाई है। देश के मुख्य सचिव के पद पर आज तक कोई महिला नहीं पँहुची है। आज देश की सैन्य सेवा , राजनीती, न्यायिक क्षेत्र व पुलिस बल में महिलओं की भागीदारी पहले की अपेक्षा बढ़ रही है परन्तु यह अब भी बहुत कम संख्या में है।

आगे की राह : उपरोक्त आंकड़े यह प्रदर्शित करते है कि हर क्षेत्र में महिलाएं अपनी उपस्थिति बढ़ा रही है। शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र बचा हो जहाँ महिला ने खुद को साबित न किया हो परन्तु आज भी महिलाओं के समक्ष अनेक समस्याएं खड़ी है। जैसे – निर्णय निर्माण में उनकी भागीदारी का बहुत कम होना, स्वास्थ्य, शिक्षा और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता में कमी, आर्थिक तौर पर कमजोर होना आदि। इन समस्याओं के पीछे एक कारण के रूप में यह तथ्य है कि लड़कियों के दिमाग में बचपन से यह बैठा दिया जाता है कि तुम लड़की हो, तुम्हें ऐसे रहना चाहिए, तुम्हें दूसरे के घर जाना है, आदि। यह सोच, लड़कियों का कमजोर होना, उनकी नियति मान लेना सिखाती है। आज समाज को इस प्रकार की सोच से ऊपर उठना होगा और आधी आबादी को खुला आसमान प्रदान करना होगा, जिसे आधी आबादी मुक्त रूप से उड़ान भर सके और खुद को बेहतर साबित कर सके। आज हम हर क्षेत्र में महिलाओं के कुछ नाम बता सकते है पर असल सर्वोदय तभी होगा जब किसी क्षेत्र में महिलाओं के कुछ नाम नही होंगे बल्कि किसी भी क्षेत्र में महिला का होना पुरूषों की तरह ही आम होगा। इसलिए बिना महिला के उदय के सर्वोदय की कल्पना करना केवल एक कोरा भ्रम होगा।

सन्दर्भ सूची :

1. गाँधी, एम.के. , "सर्वोदय" , नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1954
2. चतुर्वेदी, डॉ.ए.के., प्राचीन भारत का इतिहास, एस.वी.पी.डी. पब्लिकेशन, आगरा, 2022
3. बेनीवाल, वी.सी., जेम्स, डॉ. बुलबुल धर, "वुमेन इन इंडियन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन : प्रोस्पेक्टस एंड चौलेंजेज", जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड गवर्नेंस, वॉल्यूम 9, 2019, पेज 210 – 224
4. एन.सी.डब्लू.पी. , https://crpf.gov.in/hi/Welfare/National-Conference-of-Women-in-Police , Accessed on 04/05/2024
5. मोर वुमेन मेक अ मार्क इन दि यू.पी.एस.सी. सिविल सर्विस एग्जामिनेशन , https://www.educationtimes.com/article/tests-test-drive/99735351/more-women-make-a-mark-in-the-upsc-civil-services-exams , Accessed on 07/05/2024
6. महिला श्रम के बारे में , https://labour.gov.in/hi/womenlabour/about-women-labour , Accessed on 06/05/2024
7. लोकसभा चुनाव 2024: दो चरणों के मतदान में कुल 2823 उम्मीदवार, सिर्फ 8: महिला प्रत्याशी मैदान में , https://www.jagran.com/elections/lok-sabha-lok-sabha-election-2024-a-total-of-2823-

candidates-in-the-two-phase-voting-only-8-percent-women-candidates-are-in-the-fray-23706791.html , Accessed on 07/05/2024

8- लोकक्षेम मंत्र , https://www.bhaktibharat.com/mantra/om-sarve-bhavantu-sukhinaha , Accessed on 15/04/2024

9. स्कीम फॉर एम्पावरमेंट ऑफ वुमेन , https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1795471 , Accessed on 09/05/2024

10- पी.एम.यू.वाई. : होम, https://www.pmuy.gov.in/hi/ , Accessed on 09/05/2024

11- सुकन्या समृद्धि योजना, https://www.myscheme.gov.in/schemes/ssy , Accessed on 09/05/2024

12- वर्षांत समीक्षा दृ 2022 : महिला एवम् बाल विकास मंत्रालय]https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1885604#:~:text=%E0%A4%87%E0%A4%B8%20%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%BE%20%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%A4%E0%A4%B9%E0%A4%A4%2030.11,%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A5%80%20%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A4%20%E0%A4%B9%E0%A5%8B%20%E0%A4%9A%E0%A5%81%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A4 , Accessed on 05/05/2024

13- वुमेन इन आर्मी : सेना में माहिलाओ की कितनी हिस्सेदारी , https://www.amarujala.com/shakti/women-in-the-indian-armed-forces-data-all-you-need-to-know-in-hindi-2023-10-06 , Accessed on 25/04/2024